अप्रैल 2022, अंक-1

# तर्जनी

स्त्री स्वर केंद्रित तिमाही

## रमाबाई अंक

# रमाबाई

छोटी-सी हिंदू कन्या रमाबाई ने
गंगामूल के झुरमुटों की निविड़ शांति में एक आवाज़ सुनी
सोतों की कलकल, पत्तों के मर्मर की
वह पहाड़ों की हवाओं के साथ बहती आई, पश्चिमी समुद्र तक
आसमान ने उत्सुक धरती के कानों में फुसफुसाया:
"सत्य, वायु की तरह उन्मुक्त है!"

उस आवाज़ ने उसके पिता के पैरों को पंख दिए जाति-शृंखला से मुक्ति के लिए
अपनी नन्ही चिड़ियों को विशाल दिनमान में उड़ने की आज़ादी देने के लिए
मनु की पिंजड़े-सी संहिता के बंधन के मुकाबले,
और इस तरह वह कन्या बड़ी हुई
विचार और दृष्टि की स्पष्टता हासिल करने को
जो ज्ञात नहीं थी किसी सामान्य बुद्धि ज़नाना को

एकाकी घाट पर्वतों की कन्या! कुसुम भारत के विशाल मैदानों की!
वह जानती है कि ईश्वर ने उसके होंठ खोले हैं
अपनी मूक बहनों को स्वर का आशीष देने को,
दिया है उसे साधन उन्हें उस जगह से निकालने को
जहाँ वे दृष्टिहीन टटोल रही हैं दिशाएँ,
संकेत किया है कि वह उनके तहखानों के दरवाजे खोले और आशा का दीप जलाए।

हिंदू विधवाओं में सबसे वीर!
तुझे देखने की हिम्मत हम कैसे जुटाएँ
तू प्रेम की आजादी में इतनी निर्भीक है,
और कहते हैं हम कि 'हम आजाद हैं?'
हम जिन्होंने सुना है यीशू का स्वर, और फिर भी दास हैं
आलस्य और स्वार्थपरता के, जीवित कब्रों में दफ्न?

ओ रमाबाई, क्या हम साझा नहीं कर सकते तेरा कार्य,
जो है लगभग दैवी ?
तेरा कार्य है स्त्रीत्व का, ईसा का, हमारा उससे कम नहीं जितना तुम्हारा !
वह ताकत जो मकबरों को खोलती है, संचालित करेगी तेरे नन्हें हाथों को
चट्टान पीछे हटती है :
वे उठती हैं, वे साँस लेती हैं! तुम्हारे देश की औरतें!

*लूसी लार्कोम (1824-1893) अमरीकी अध्यापिका और लेखिका थीं। उनकी यह कविता ए. बी. शाह द्वारा संपादित किताब 'द लेटर्स एंड कॉरेसपॉनडेंस ऑफ़ पंडिता रमाबाई' (प्रकाशन –महाराष्ट्र राज्य का साहित्य और संस्कृति बोर्ड) में संकलित है। इसका अंग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद अपूर्वानंद ने किया*

# तर्जनी

अप्रैल 2022 : अंक- 1

**संपादक मंडल**

पूर्वा भारद्वाज

देवयानी भारद्वाज

चारु सिंह

नासिरुद्दीन

**परिकल्पना व डिज़ाइन**

नासिरुद्दीन

**आवरण चित्र**

सोमेश कुमार

**तर्जनी लिखावट**

ऋषि श्रीवास्तव

(सभी तरह के संपादन कार्य पूर्णतः अवैतनिक हैं। तर्जनी में प्रकाशित रचनाएँ रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना ज़रूरी नहीं है।)

निजी और सीमित वितरण के लिए प्रकाशित ई-पत्रिका

**ईमेल**

**TarjaneePatrika@gmail.com**

# इस अंक में...


1. अपनी बात

2. रमाबाई की जीवन यात्रा

**रमा शब्द**

3. वह सरस्वती: वह पंडिता

4. उभरता स्वर: स्त्री-धर्मनीति

5. घर के काम

6. हंटर कमीशन में गवाही

7. 'हिन्दू स्त्री का जीवन' से

8. नियंत्रण, विवेक और आज़ादी

9. प्लेग प्रसंग और ब्रिटिश हुकूमत

10. वसीयतनामा

**छवि-प्रतिच्छवि**

11. मानपत्र

12. दयानंद सरस्वती से संपर्क

13. रमाबाई रानडे का संस्मरण

14. रवींद्रनाथ टैगोर की टिप्पणी

15. छात्राओं का पत्र

16. वाशिंगटन संडे स्टार, 1907 में

16. मिस फुलर की ज़ुबानी

लूसी लार्कोम की कविता

ज्योतिबा फुले की कविता


तर्जनी

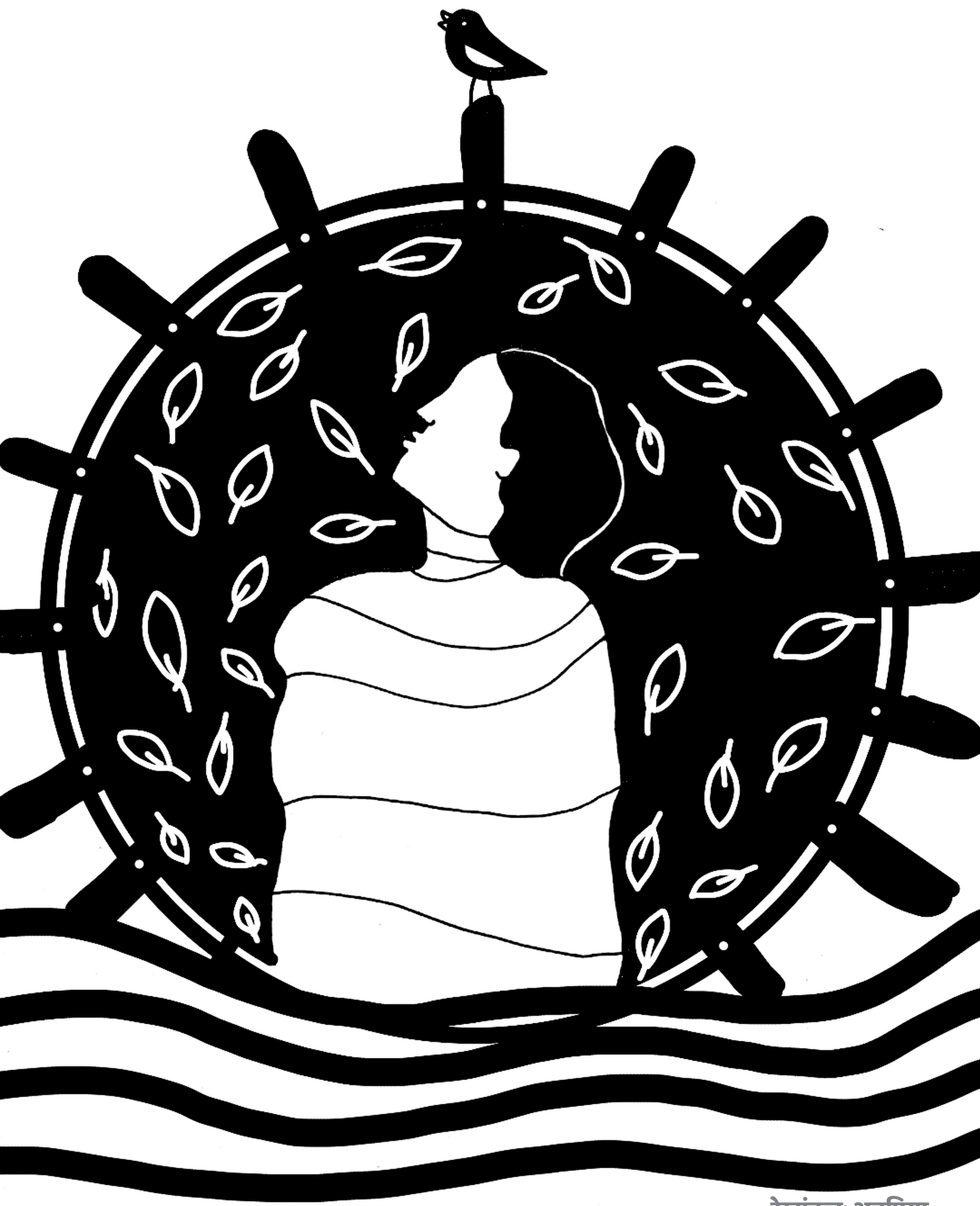

रेखांकन: अनुप्रिया